चल मेरी ढोलकी ढमाक ढम

सम्पादक : श्री सूर्यराज व्यास

प्रकाशन वर्ष : 1926 (जोधपुर,राज.)

एक थी बकरी | एक था बकरिया | एक दिन बकरिये ने अपनी माँ से कहा | माँ, मैं नानेरे जाऊँगा | बकरी ने जवाब दिया | वन में बहुत जानवर हैं | तू देखभाल कर जाना | बकरिया रवाना हुआ | राह में कुत्ता मिला | कुत्ते ने कहा | बकरिये ! बकरिये ! तू कहाँ जाता है ? बकरिये ने कहा 'नानेरे' |

बकरिया : बकरी का बच्चा, नानेरे : ननिहाल

बकरिये को मिला कुत्ता

कुत्ते ने कहा—मैं तुझे खा जाऊँगा |

तब बकरिये ने कहा —

नानेरे जानेदे, दही दूध खाने दे !

मोटा ताजा होने दे, पीछा आऊँ तब

खाजाना !

कुछ दूर जाने पर बकरिये को साँप मिला | उसने भी पूछा | बकरिया ! बकरिया ! तू कहाँ जाता है ?

पीछा : वापिस

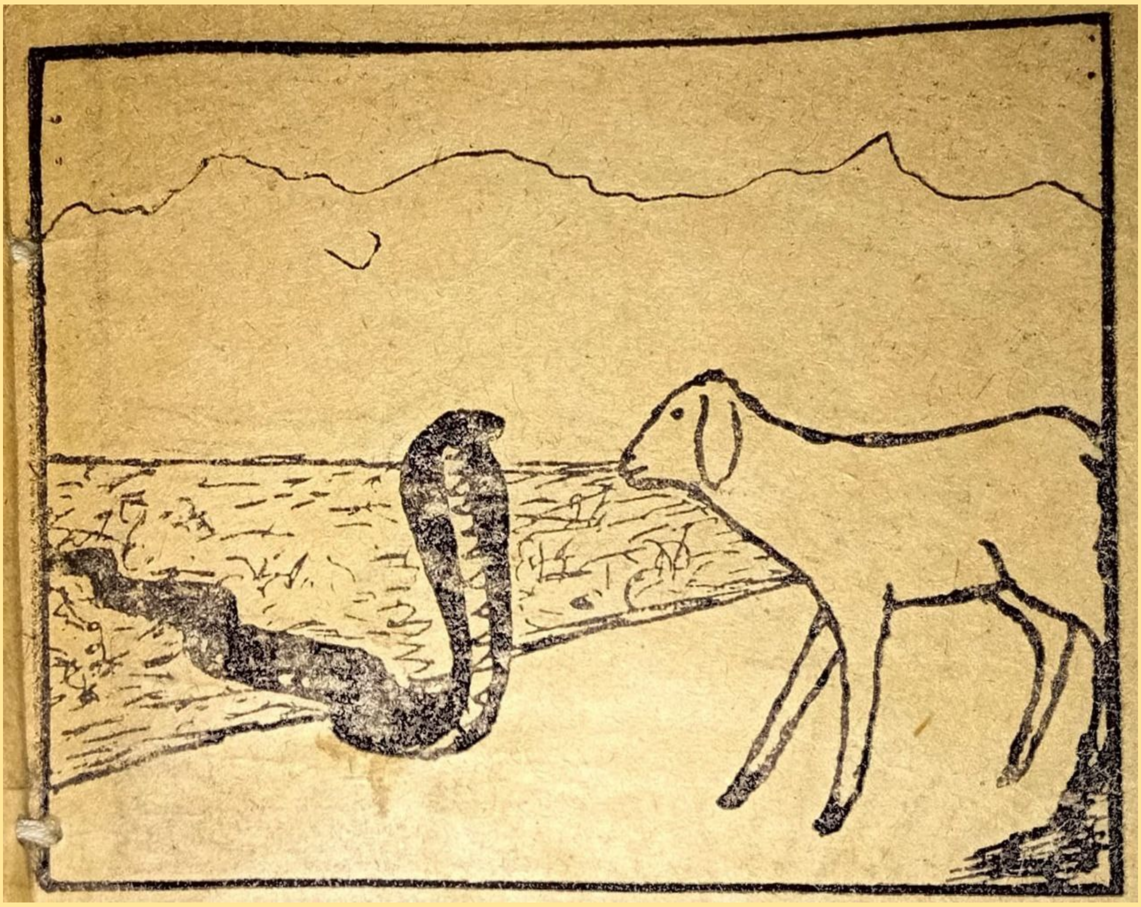

बकरिये को मिला साँप

बकरिये ने कहा— 'नानेरे' | साँप ने कहा—मैं तुझे डसूंगा | तब बकरिया बोला—

नानेरे जानेदे, दही दूध खाने दे !
मोटा ताजा होने दे, पीछा आऊँ तब खाजाना !

इसके आगे उसे भेड़िया मिला | उसने पूछा | बकरिया ! बकरिया !

तू कहाँ जाता है ? बकरिये ने कहा— 'नानेरे' | भेड़िये ने कहा— मैं तुझे खा जाऊँगा | तब बकरिया बोला—

नानेरे जानेदे, दही दूध खाने दे !
मोटा ताजा होने दे, पीछा आऊँ
तब खाजाना !

आगे जाने पर उसे भालू मिला | भालू ने भी बकरिये से पूछा | तू कहाँ जाता है ? बकरिये ने कहा— 'नानेरे' | भालू ने कहा—मैं तुझे खा जाऊँगा | तब बकरिया बोला—

नानेरे जानेदे, दही दूध खाने दे !
मोटा ताजा होने दे, पीछा आऊँ
तब खाजाना !

थोड़ी दूर जाने पर बकरिये को चीता मिला | उसने भी पूछा | तू कहाँ जाता है ? बकरिये ने कहा— 'नानेरे' | चीते ने कहा—मैं तुझे खा जाऊँगा | तब बकरिया बोला—

नानेरे जानेदे, दही दूध खाने दे !
मोटा ताजा होने दे, पीछा आऊँ
तब खाजाना !

अब बकरिये का नानेरा थोड़ी दूर पर ही था | उसे शेर मिल गया | अब तो बकरिया घबराया | शेर ने बकरिये को देखते ही जोर से पूछा | तू कहाँ जाता है ? बकरिये ने गिड़गिड़ा कर कहा— 'नानेरे' | शेर ने कहा—मैं तुझे खा जाऊँगा | तब बकरिया बोला—

नानेरे जानेदे, दही दूध खाने दे !
मोटा ताजा होने दे, पीछा आऊँ
तब खाजाना !

अब बकरिया नानेरे पहुँचा | उसकी नानी ने उसका खूब लाड-प्यार किया | उसके खाने के लिए दूध, दही और छाछ के मटके के मटके भरे हुए थे | बकरिया खूब मजे से

खाने लगा और खेलने लगा | एक दिन उसकी नानी ने देखा कि बकरिया खाता भी खूब है | खेलता भी खूब है | पर वह मोटा-ताजा नहीं होता | उसने बकरिये से पूछा | बेटा तू खाता है | तू पीता है | तू खेलता है | पर तू मोटा-ताजा नहीं होता | तब बकरिया रोने लगा | उसने कहा | मैं पीछा जाऊँगा तब

कुत्ता, साँप, भेड़िया, भालू, चीता व शेर मुझे मार कर खा जायेंगे | बकरिये की नानी ने कहा | बेटा तू रो मत | खूब खा | खूब खेल | खूब मोटा ताजा हो | तू डर मत | मैं तेरी घर तक रखवाली कर लूंगी | अब तो बकरिया खूब ही राजी हुआ | खूब खाने लगा | खूब पीने लगा | खूब खेलने लगा | थोड़ी ही दिनों में वह खूब मोटा ताजा

हो गया |

अब एक दिन बकरिये ने कहा| नानीजी ! नानीजी ! मैं घर जाऊँगा | नानी ने कहा, ठीक बेटा | नानी ने उसके लिए चूरमा बनाया | पानी की एक झारी भर दी | तब उस बकरिये के लिए एक ढोलकी बनवाई |

झारी : पानी रखने का एक प्रकार का बर्तन

अब उसने बकरिये को ढोलकी में बिठा दिया

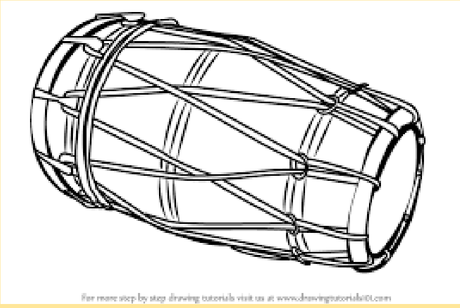

| उसमें चूरमे का कटोरा रख दिया | उसमें पानी की झारी भी रखदी | फिर बकरिये से बोली | देख बेटा, जो कोई तुझे पूछे तो उसे कहना—

किसका है बकरिया किसके हो तुम ?

चल मेरी ढोलकी ढमाक ढम |

इतना कह ढोलकी को नानी ने रवाना की | सबसे पहले ढोलकी को शेर मिला | उसने ढोलकी को देखते ही पूछा | ढोलकी ! ढोलकी ! क्या तूनें बकरिये को देखा ? ढोलकी के भीतर बैठे बकरिये ने कहा—

किसका है बकरिया किसके हो तुम ?
चल मेरी ढोलकी ढमाक ढम |

कुछ दूर जाने पर चीता मिला | उसने पूछा | ढोलकी ! ढोलकी ! क्या तूनें बकरिये को देखा ? ढोलकी के भीतर बैठे बकरिये ने उसको भी झट से उत्तर दिया —

किसका है बकरिया किसके हो तुम ?
चल मेरी ढोलकी ढमाक ढम |

थोड़ी ही दूर पर उसे भालू मिल गया | उसने भी पूछा | ढोलकी ! ढोलकी ! क्या तूनें बकरिये को देखा ? उसको भी बकरिये ने जवाब दिया —

किसका है बकरिया किसके हो तुम ?
चल मेरी ढोलकी ढमाक ढम |

इससे आगे उसे भेड़िया मिला | उसने भी ढोलकी से पूछा | ढोलकी ! ढोलकी ! क्या तूनें बकरिये को देखा ? उसको भी बकरिये ने फिर वही जवाब दिया —

किसका है बकरिया किसके हो तुम ?

चल मेरी ढोलकी ढमाक ढम |

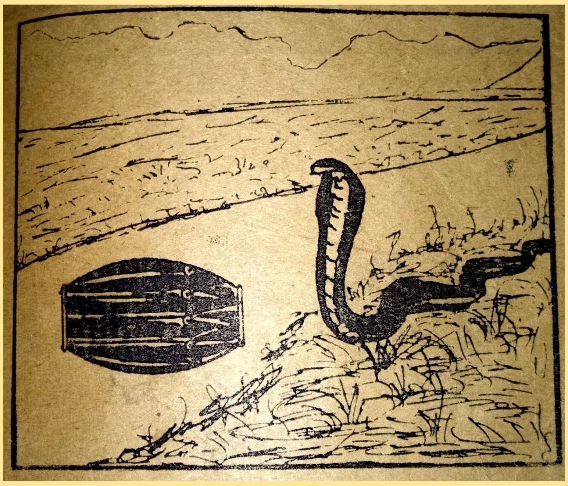

आगे जाने पर ढोलकी को साँप मिला | उसने भी ढोलकी से पूछा | ढोलकी ! ढोलकी ! क्या तूनें बकरिये को देखा ? बकरिये ने फिर वही जवाब दिया —

किसका है बकरिया किसके हो तुम ?

चल मेरी ढोलकी ढमाक ढम |

आगे जाने पर ढोलकी को साँप मिला | उसने भी ढोलकी से पूछा | ढोलकी ! ढोलकी ! क्या तूनें बकरिये को देखा ? बकरिये ने फिर वही जवाब दिया —

किसका है बकरिया किसके हो तुम ?
चल मेरी ढोलकी ढमाक ढम |

अब बकरिये के गाँव के पास ही कुत्ता मिला | उसने भी ढोलकी से पूछा | ढोलकी ! ढोलकी ! क्या तूनें बकरिये को देखा ? बकरिये ने फिर वही जवाब दिया —

किसका है बकरिया किसके हो तुम ?

चल मेरी ढोलकी ढमाक ढम |

अब ढोलकी बकरिये के घर पहुँची | बकरिये ने अपनी माँ को पुकारा | माँ अपने बेटे की बोली सुनकर दौड़ी आई | उसको बकरिया कहीं भी दिखाई नहीं दिया | इतने में बकरिया ढोलकी के भीतर बैठा हुआ बोला | माँ, मैं ढोलकी में बैठा हूँ | मुझे निकाल |

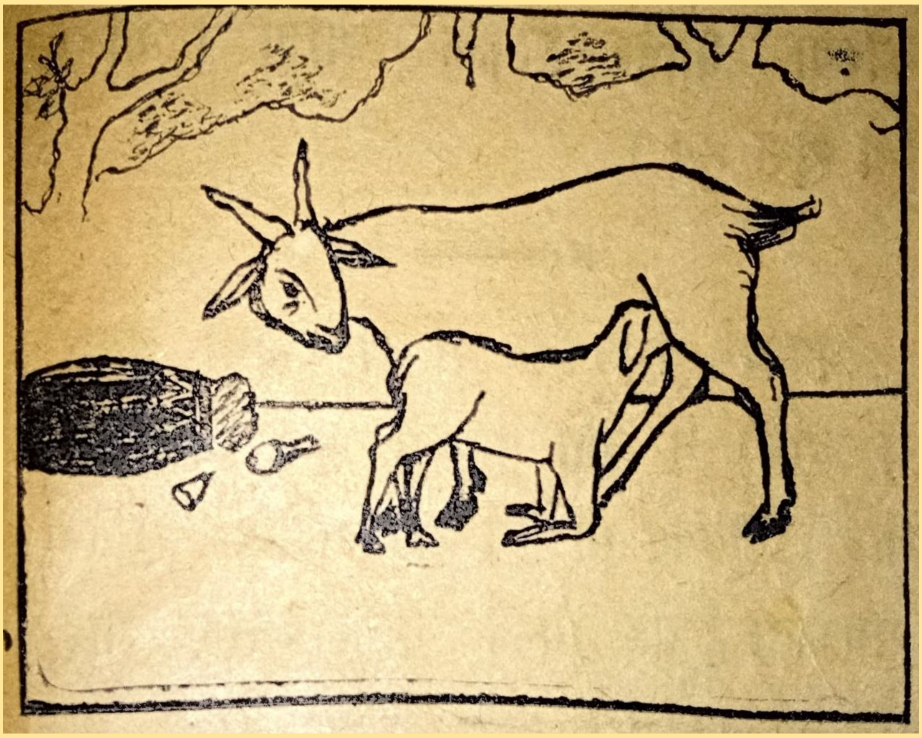

तब बकरी ने ढोलकी फोड़ डाली | बकरिया बाहर आया | माँ—बेटे दोनों खुश हुए |

बकरिये ने अपनी माँ को कहानी सुनाई | मेरी दादी ने वही कहानी मुझे बचपन में सुनाई | तुमको भी मैंने वही कहानी सुनाई | मैं समझता हूँ यह तुमको जरूर पसंद आई, प्यारे—बालकों !

मन लगा के सुनना इसको |

पढ़ना और पढ़वाना सबको ||